गीता के 18 अध्यायों से उपचार

हमारी संस्कृति विश्व स्तरीय सर्वोच्चता प्राप्त कर मानवता को अमृतमय संदेश देती है कि भौतिक समृद्धि की अपेक्षा आत्मिक समृद्धि ही श्रेयस्कर हैं, जिसमें तृप्ति और शांति है, सुख और सबके मंगल की वास्तविक कामना है। प्रत्येक वर्ण तथा प्रत्येक आश्रम के लिए तो इसकी उपयोगिता है ही जीवन के आदर्श शिक्षण के लिए भी इसकी उपादेयता तथा महत्ता स्वयं सिद्ध है। गीता महात्म्य में इसकी महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है-

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्र विस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिसृता।।

अर्थात् 'एक साधे सब सधे' का प्रतिपादन करते हुए विस्तुत शास्त्र समुदाय के स्थान पर एक गीता के अध्ययन का प्रावधान इस दृष्टि से किया गया है इसी के माध्यम से व्यक्ति अनायास सर्व-शास्त्र सार को ग्रहण कर सकता है। गीता का हर अध्याय आपकी किसी न किसी समस्या का समाधान है। आइये आप स्वयं जानियें!

01 शनि का विषाद

मोह और कर्त्तव्य के बीच का तनाव शनि के प्रभाव जैसा विषाद पैदा करता है। प्रथम अध्याय का नियमित पाठन शनि की इस पीड़ा को कम करता है।

02 भगवान श्रीकृष्ण की दया

जिन कुंडलियों में शनि पर गुरू की दृष्टि हो, उन्हें दूसरे अध्याय का नियमित पाठन करना चाहिए।

03 शंका का समाधान

दसवें भाव पर शनि की दृष्टि होने पर तीसरे अध्याय का पाठन करना चाहिए। इससे जातक को अपने कर्म क्षेत्र में मंगल और गुरू का सहयोग मिलता है।

04 इष्ट साधन

जिन जातकों का लग्न कमजोर हो और इष्ट निर्धारित नहीं हो, उन्हें चातुर्य अध्याय का पाठन करना लाभ दिलाता है। इससे विचारों में भी स्थिरता आती है।

05 द्वंद्व का निराकरण

कुंडली में नौंवे-दसवें भावों में अंतर्संबंध होने पर इस अध्याय का पाठ लाभ देगा। दोनों भावों के स्वामी ग्रह अगर शत्रु हों तो यह अधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

06 समय का बदलाव

खराब दशा के बाद अच्छी दशा आने पर जातक यह अध्याय पढ़ें। गुरू और शनि ग्रहों की दशा में बेहतर होती है।

07 सांसारिक समस्या

मोक्ष का भाव (आठवां भाव) खराब होने पर सांसारिक समस्याएं पीड़ित रखने लगती है। आठवां भाव नष्ट या पीड़ित होने पर इस अध्याय का पाठन लाभ देता है।

08 मृत्यु का भय

मृत्यु से पहले मृत्यु का भय आठवें और बारहवें भाव के संबंध से आता है। इस अध्याय का पाठन मृत्यु के भय को कम या समाप्त करता है।

09 लय पाने के लिए

क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पा रहे जातक जिनकी कुंडली में लग्नेश, नवमेश और मूल स्वभाव राशि का संबंध हो, नवम अध्याय का पाठ कर लय में आ सकते हैं।

10 लग्नेश को मजबूत बनाएं

गीता के दसवें अध्याय का पाठन हर जातक को करना चाहिए। इससे जातक का लग्न मजबूत होता है।

11 लाभ का सौदा

काम करते-करते जातक कभी उखड़ने लगे तो यह अध्याय उपयोगी सिद्ध होता है। ग्यारहवें यानि लाभ के भाव को मजबूत बनाने के लिए इस अध्याय का नियमित पाठ किया जाना चाहिए।

12 प्रारब्ध का बंधन

जातक की कुंडली का पांचवा और नौवा भाव कमजोर होने पर ग्यारहवें भाव का पाठन लाभ देता है। नौंवे धर्म के भाव को मजबूत करने के लिए भी इस अध्याय का सहारा लिया जा सकता है।

13 दूसरी दुनिया से संबंध

कुंडली में चंद्रमा और बारहवें भाव का संबंध होने पर व्यक्ति वैराग्य के बारे में सोचने लगता है। इस अध्याय का नियमित पाठन जातक को संसार में रहकर अपनी जिम्मेदारियां पूरी करते हुए बंधनों से मुक्त रहने में मदद करता है।

14 अकस्मात् लाभ

आठवें भाव में उच्च का ग्रह मौजूद होने पर जातक को अचानक लाभ की स्थितियां बनती है। ऐसे में गीता के चौदहवें भाव का नियमित पाठन आध्यात्मिक दृष्टि से उम्मीद से अधिक लाभ दिलाने में सहायक सिद्ध होता है।

15 संभावनाएं

प्रारब्ध में संचित अच्छे कर्मों का लाभ लेने के लिए इस अध्याय का पाठन महत्त्वपूर्ण है। पंचमेश और लग्नेश का संबंध होने पर इस अध्याय का पाठन करना लाभदायक रहता है।

16 शक्ति संतुलन

कुंडली में सूर्य और मंगल खराब स्थिति में हों तो इस अध्याय का पाठन जातक को लाभ दिला सकता है। यह अध्याय शक्तियों को संतुलित करने और उनके सही उपयोग के लिए जरूरी है।

17-18 राहु की पीड़ा

राहु की महादशा अथवा कारक ग्रह सहित कुंडली में राहु से पीड़ित होने पर सत्रहवां और अठारवां अध्याय लाभ देता है। इन अध्यायों में बताया गया जातक को खराब दशा में शक्ति देता है तो दूसरी ओर बुरे असर से बचाने में भी सहायक सिद्ध होता है।

♦♦♦

पारद दक्षिणावर्ती शंख

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रूप होने के कारण सभी देवी-देवताओं के द्वारा वंदनीय एवं स्पृहनीय है। पारद धातु अपने आप में पूर्णता का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति और धर्म में शंख का बड़ा महत्त्व है। विष्णु के चार आयुधों में शंख को भी एक स्थान मिला है। मन्दिरों में आरती के समय शंखध्वनि का विधान है तथा प्रत्येक तान्त्रिक पूजा में शंख के द्वारा अभिषेक का महात्म्य है। शंख के दर्शन मात्र से सभी पाप ऐसे नष्ट हो जाते है। यह दक्षिणावर्त शंख जिसके घर में रहता है वहाँ मंगल ही मंगल होते हैं, लक्ष्मी स्वयं स्थिर निवास करती हैं। पारद शंख की स्थापना से निश्चय ही धनागम में वृद्धि होती है तथा सम्पूर्ण जीवन में कभी धनाभाव नहीं होता।

जब श्रीकृष्ण ने द्वारिका नगरी बसाई तो पहले उन्होंने वास्तुशास्त्र के आधार पर यह सुनिश्चित किया कि नगरी का आकार शंख की भांति हो और नगर में समृद्धि तथा सम्पन्नता हो, इसलिए उन्होंने स्वयं पारद शंख-साधना सम्पन्न की, तभी द्वारिका नगरी अपने समय में सबसे धनी नगरों में सर्वोच्चता पर थी। धन, धान्य, अन्न, आभूषणों, रत्नों, भव्य प्रसादों से पूर्ण यह नगरी इन्द्रलोक के आकर्षण की भी धूमिल कर देती थी। ऐसी ही समृद्धि प्रदान करता है, यह 'पारद शंख', जिसका पूर्ण लाभ किसी भी बुधवार अथवा पुष्य नक्षत्र पर प्राप्त किया जा सकता है।

पारद दक्षिणावर्ती शंख न्यौछावर 2100/-

सम्पर्क करें:- **विश्व तंत्र ज्योतिष**

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर-342001(राज.)
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.fameandfortune.org

कर्ज मुक्ति पैकेट

- क्या आप ऋण के बोझ से अभिशप्त हैं?
- क्या संतान की उच्च शिक्षा के लिये लिया गया ऋण चुकाने में असमर्थ हैं?
- क्या बिटिया के घर संसार को संवारने के लिये लिया ऋण आपके जीवन को बेरंग कर रहा है?
- क्या विश्व मंदी के इस दौर की त्रासदी के आप भी शिकार हैं?
- क्या फैंसी लोन आपके गले की फांस बन गया है?

यदि आपका जवाब हाँ है तो आज ही अभी जानें इसके निवारण के प्रयासों(उपाय) के बारे में

बेकारी, बेरोजगारी, साधनहीनता आदि कारण बन जाते हैं ब्यि के अर्थोपार्जन में असमर्थता के, तब विवश होकर ब्यि ऋण के जाल में पांव डाल देता है। बस फिर वो इस भंवरजाल में फंसता चला जाता है। समय पर ऋण ना चुका पाने की शर्मिंदगी इतनी गहरी होती है कि व्यक्ति घर, परिवार, दोस्तों से आंख मिलाने से भी कतराता है। शारीरिक रोग तो फिर भी मरने के बाद पीछा छोड़ देते हैं, लेकिन ऋण का रोग तो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। आप नहीं चुका पाये तो आपकी संतान को चुकाना पड़ता है।

पैकेट न्यौछावर मात्र 2500 रू.

यदि आप ऋण के बोझ से छुटकारा पाना चाहते है, तो यह है आपके लिये एक सुनहरा अवसर। आज ही 'ऋणहर्ता गणपति पैकेट के लिये ऑर्डर करें और इस साधना को सम्पन्न करें। इस साधना पैकेट में आप निम्न वस्तुएं प्राप्त करेंगें और साथ ही आपको साधना विधि भी भेजी जायेगी।

1) ऋणहर्ता गणपति यंत्र
2) ऋणमोचन लक्ष्मी-गणेश पिरामिड
3) ऋणहर्ता विजय गणपति प्रतिमा
4) ऋणमोचन सहायक मूंगे की माला
5) विजय गणपति प्रतिमा लॉकेट (मूंगे में)

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

आप सीधे ही 'त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र' के बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं। आपकी सुविधा के लिये बैंक एकाउन्ट नम्बर इस प्रकार है
HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र
'त्रिनेत्र भवन' प्लॉट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)
फोन: 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स: 0291-2618625
E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org